६९२ बंबई, द्वितीय जेठ वदी, १९५२

दुर्लभ मनुष्यदेह भी पूर्वकालमें अनंतबार प्राप्त होनेपर भी कुछ भी सफलता नहीं हुई; परंतु इस मनुष्यदेहकी कृतार्थता है कि जिस मनुष्यदेहमें इस जीवने ज्ञानीपुरुषको पहचाना, तथा उस महाभाग्यका आश्रय किया। जिस पुरुषके आश्रयसे अनेक प्रकारके मिथ्या आग्रह आदिकी मंदता हुई, उस पुरुषके आश्रयपूर्वक यह देह छूटे, यही सार्थकता है। जन्मजरामरणादिका नाश करनेवाला आत्मज्ञान जिसमें विद्यमान है, उस पुरुषका आश्रय ही जीवके जन्मजरामरणादिका नाश कर सकता है; क्योंकि वह यथासंभव उपाय है। संयोग-संबंधसे इस देहके प्रति इस जीवका जो प्रारब्ध होगा उसके व्यतीत हो जानेपर इस देहका प्रसंग निवृत्त होगा। इसका चाहे जब वियोग निश्चित है, परंतु आश्रयपूर्वक देह छूटे, यही जन्म सार्थक है, कि जिस आश्रयको पाकर जीव इस भवमें अथवा भविष्यमें थोड़े कालमें भी स्वस्वरूपमें स्थिति करे।

आप तथा श्री मुनि प्रसंगोपात्त खुशालदासके यहाँ जानेका रखियेगा। ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदिको यथाशक्ति धारण करनेकी उनमें संभावना दिखायी दे तो मुनिको वैसा करनेमें प्रतिबंध नहीं है।

श्री सद्गुरुने कहा है ऐसे निर्ग्रंथमार्गका सदैव आश्रय रहे।

मैं देहादिस्वरूप नहीं हूँ, और देह, स्त्री, पुत्र आदि कोई भी मेरे नहीं हैं, शुद्ध चैतन्यस्वरूप अविनाशी ऐसा मैं आत्मा हूँ, इस प्रकार आत्मभावना करते हुए रागद्वेषका क्षय होता है।